परिचर्चा

दिनांक - 25 अप्रैल 2018

स्थान - एकलव्य, होशंगाबाद, मालाखेडी

25 अप्रैल 2018 को होशंगाबाद ऑफिस में युवाओ के लिए एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। सहायक कलेक्टर स्वप्निल वानखड़े परिचर्चा का हिस्सा बने और युवाओ के UPSC परीक्षा और सरकार एवं समाज से जुड़े हुए प्रश्नों के जवाब दिए।

चित्र 1 - स्वप्निल जी का स्वागत करते हुए centre incharge माधव केलकर

परिचर्चा का संचालन रजत पीटर ने किया एवं माधव केलकर और प्रदीप चौबे ने उनका पुष्प गुच्छ से स्वागत किया।

सबसे पहले प्रदीप चौबे ने एकलव्य का परिचय दिया और एकलव्य के इतिहास के बारे में बात करते हुए साझा किया की किस तरह एकलव्य शिक्षा के क्षेत्र में एक सकारात्मक और गुणवत्ता का माहौल बनाने का निरंतर प्रयत्न करता आ रहा है। ज़िया अशरफ ने इस परिचर्चा के उद्देश्य बताए।

चित्र 2 - एकलव्य का परिचय देते प्रदीप चौबे

इसके बाद स्वप्निल वानखड़े ने UPSC का फुल फॉर्म न जानने से लेकर अपने IAS बनने तक के सफ़र पर रौशनी डाली। इसी दौरान उन्होंने आए हुए युवाओ को प्रोत्साहित करने के लिए परीक्षा से जुडी हुई प्रचलित बुद्धिमत्ता की अवधारणाओं और मान्यताओं को अपने निजी जीवन से जोड़ते हुए तोड़ा। उन्होंने सभी को

चित्र 3 - परिचर्चा मे प्रतिभागी

चित्र 4 - युवाओं के सवालो का जवाब देते हुए स्वप्निल जी

चित्र 5 - सवाल पूछते हुए युवा

चित्र 6 - एकलव्य की तरफ से स्वप्निल जी को पुस्तकें उपहार दी गईं

चित्र 7 - समापन एवं आभार गायत्री जी द्वारा किया गया

'Power of Subconscious Mind' नामक किताब पढने की भी सलाह दी।

इसके बाद मंच युवाओ के प्रश्नों के लिए खोल दिया गया और परीक्षा से जुड़े प्रश्न पूछने के बाद रेप, होशंगाबाद में रेत खनन, भेद भाव आदि सामाजिक मुद्दों पर भी गहन चर्चा हुई। स्वप्निल जी ने लोकतंत्र की कमियों के बारे में बात करते हुए कहा की सरकार बी से हो या सी से, काम वैसे ही करती है जैसे की लोग चाहते हैं और लोगो पर निर्भर करता है की वो अपने देखने का नजरिया बदले और अपने और अपने आस पास के लोगो की ज़िम्मेदारी ले।

इसके बाद गायत्री ने आयोजकों और आमंत्रित लोगों को धन्यवाद दिया। आए हुए युवाओं को एक नीले डब्बे में परिचर्चा पर अपनी टिपण्णी और आगे की चर्चो के लिए सुझाव लिखकर डालने का निवेदन किया गया। आने वाली परिचर्चाओ के श्रृंखला के लिए की गई इस शुरुआत को सभी युवाओं ने सराहा।